अध्ययन सामग्री स्नातक भाग- 2
विषय: संस्कृत
पत्र: तृतीय

डॉ० सावित्री सिंह,
संस्कृत विभाग,
रो० स० का० सासाराम

दिनांक 4. 1. 2020

Topic शुकनासोपदेश के आधार पर लक्ष्मी की विशेषताओं का वर्णन (शेष भाग)

बाणभट्ट के अनुसार यह लक्ष्मी 'संगीतशाला भूविकार-नाट्यानाम् आवासदरी दोषाशीविषाणाम्। यह भ्रूविकार रूपी नाटकों की रंगभूमि के समान है। साँपों की निवास वाली गुफाओं की भाँति अवगुणों की निवासस्थली है। इतना ही नहीं "उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम् अकालप्रावृट् गुणकलहंसकानाम् विसर्पणभूमिर्लोकापवाद-विस्फोटकानाम्।

यह लक्ष्मी वैसी वेत्रलता अर्थात् बेंत की छड़ी है जिससे सत्पुरुषों के अच्छे व्यवहारों को ही भगाया जाता है। इतना ही नहीं गुणरूपी कलहंसों को दूर भगाने वाली अकालवर्षा तथा लोकापवाद रूपी फोड़े के फैलने का स्थान है।

प्रस्तावना कपटनाटकस्य। कदलिका कामकरिणः। वध्यशाला साधुभावस्य। राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य।

कपटरूपी नाटक की मानो प्रस्तावना ही है। कामरूपी हाथी के लिए कदली का पेड़ है। साधु भावों की वध्यभूमि है। धर्मरूपी चन्द्रमण्डल को ग्रस्त करने वाली राहु की जिह्वा है।

→

न हि तं पश्यामि। यो ह्यपरिचितयानया न निर्भरमुपगूढः यो वा न विप्रलब्धः। (यतो हि) नियतमियमालेख्यगतापि चलति। पुस्तमय्यपि इन्द्रजालमाचरति। उत्कीर्णापि विप्रलभते। श्रुतापि अभिसन्धत्ते। चिन्तितापि वञ्चयति।

ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं दिखलाई देता जो कि लक्ष्मी से आश्लिष्ट होकर छला न गया हो। क्योंकि यह तो निश्चित रूप से चित्रलिखित होती हुई भी स्थिर नहीं रहती है। मिट्टी काष्ठ चमड़े आदि से बनी गुड़िया के रूप में होने पर भी इन्द्रजाल करती है। पत्थर आदि पर खुदी हुई होने पर भी धोखा देती है। सुनी हुई भी छल करती है, चिन्तन की गई भी वञ्चित करती है।

और इस प्रकार के स्वभाव वाली दुष्ट आचार वाली किसी प्रकार संयोग से प्राप्त लक्ष्मी से परिगृहीत राजा (पकड़े गए राजा) लोग दुःखी होते हैं तथा सभी प्रकार के अविनयों को प्राप्त होते हैं।

समाप्त